पेड़ बोलते हैं

नाटक

सुबोध पंडित

पेड़ बोलते हैं

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
नयी दिल्ली-110002

प्रकाशक :
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
शफीक मेमोरियल
17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नयी दिल्ली-110 002

© भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ : मूल्य : 5 00
पहला संस्करण 1987

मुद्रक :
त्यागी प्रिंटिंग प्रेस
त्रिलोकपुरी
दिल्ली-110091

निवेदन

भारत जैसे देश में, जहां आज भी गरीबी और निरक्षरता बड़े पैमाने पर फैली हुई है, विज्ञान का एक काम यह भी है कि वह आम लोगों के तर्कपूर्ण ढंग से सोचने तथा काम करने की, और समय के साथ चलते हुए एक सही फैसले पर पहुंचने की, शक्ति को बढ़ावा दे। कहने की जरूरत नहीं कि विज्ञान महज उद्देश्य नहीं है, बल्कि वह एक दृष्टिकोण है। इसलिए यह जरूरी है कि लोगों के सोचने-समझने के दृष्टिकोण में आधुनिकता लायी जाए, ताकि वे अपने और अपने आसपास के विकास से जुड़े हुए सवालों पर तर्कपूर्ण नजरिये से विचार करें और खेती तथा उद्योग-धन्धों में विज्ञान एवं तकनीकी से भरपूर लाभ उठा सकें। दरअसल, वैज्ञानिक मिजाज को सही तरीके से समझना और उसे कारगर बनाना आज हमारे देश की एक बड़ी जरूरत है। अगर देश में उन्नति की रफ्तार को तेजी से आगे ले जाना है तो विज्ञान और तकनीकी को हर भारतीय के जीवन का एक हिस्सा बनना होगा।

प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी ने भी भारत के वैज्ञानिकों से कहा है कि "देश को 21वीं शताब्दी में ले जाने के लिए हमें आज की जरूरतों के हिसाब से ही नहीं बल्कि उस समय की जरूरतों को सोचकर अभी से काम शुरू करना होगा। यह बात किसी एक क्षेत्र में नहीं बल्कि

कृषि, उद्योग, रक्षा और अन्य सभी क्षेत्रों के अनुसन्धान और विकास योजनाओं पर लागू होती है।" प्रधानमंत्री ने वैज्ञानिकों को इस बात के लिए भी आगाह किया है कि "वे नये उत्पादन तैयार करते समय इस बात का पूरा ध्यान रखें कि उसके कारण पर्यावरण खराब न हो।"

विज्ञान और प्रौद्योगिकी की इसी महत्वपूर्ण भूमिका को ध्यान में रखते हुए अन्य महत्वपूर्ण विषयों के साथ ही भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ ने नवसाक्षर प्रौढ़ पाठकों के लिए विज्ञान एवं तकनीकी विषयों से जुड़े सन्दर्भों पर भी उपयोगी पुस्तकें प्रकाशित करने की दिशा में पहल किया है। यह पुस्तक भी इसी सिलसिले की एक सुखद उपलब्धि है। बड़ी सरल और रोचक भाषा-शैली में अपने विषय को प्रस्तुत करने वाली ये पुस्तकें, निस्सन्देह, अद्वितीय हैं।

अपनी पुस्तक को प्रकाशित करने का अवसर देने के लिए भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ की ओर से हम सभी सहयोगी लेखकों के प्रति आभारी हैं। साथ ही हम इन पुस्तकों के प्रकाशन में 'एस्पेबे' (एशियन साउथ पैसेफिक ब्यूरो) से मिली सहायता के लिए भी विनम्र आभारी हैं।

—जे० सी० सक्सेना
(महासचिव)

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
नई दिल्ली-110002
10 दिसम्बर, 1987

पेड़ बोलते हैं

पात्र :

शोभा
अशोक
बापू
रेखा
दिनेश
मां
डॉ० माथुर
मिस किटी
पीर साहब
दो सहेलियां
ओवरसियर
मजदूर

पहला दृश्य

मंच पर एक छोटा सा घर। घर के अन्दर जाने का खास दरवाजा। दरवाजे के पास बरामदा। बरामदे के बाहर खुला अहाता। बरसात की रिमझिम बूंदों और हवा की सनसनाहट की आवाजें सुनाई पड़ती हैं। बरामदे में बारह साल की एक लड़की आती है। छप्पर से गिरती हुई वर्षा के पानी को हथेली में लेती है। फिर उछल कर आंगन में आती है। वह बारिश में बड़े उत्साह से नहाती है और गाती है। बरामदे में लड़की का पिता आकर खड़ा होता है और मुसकराता हुआ अपनी बेटी को नहाते देखकर खुश होता है। पिता की तरफ ध्यान जाने पर लड़की बरामदे के पास आती है।

लड़की : बापू ! कैसी बढ़िया बारिश हो रही है। चलो तुम भी नहा लो। मजा आएगा।

बापू : नहीं शोभा, तू नहा।

शोभा : चलो न, बापू !–कितने सूखे और इन्तजार के बाद तो इस बार यह बारिश आती है। तुम भी नहा लो न ! (शोभा बापू का हाथ पकड़ कर बारिश में ले जाती है।)

बापू : नहीं –नहीं – शोभा ! रहने दे। देख गिर पड़ूंगा। फिसल जाऊंगा······अरे······अरे······

(शोभा नहीं मानती। वह बापू को बारिश में खींच ले जाती है। बरखा की बूंदों से बापू भी खुश होते हैं। दोनों नहाते हैं। फिर दोनों गाने लगते हैं।)

शोभा : बापू ! अरे बापू, इस तरफ आओ। इधर बहुत मोटी धार पड़ रही है।

(दोनों धार के नीचे खड़े नहाते हैं। हवा की सांय-सायं और बरसात की मिली-जुली आवाजें सुनाई पड़ती हैं। शोभा गाती-गाती चक्कर लगाती नाचती जाती है। बापू आंगन के बीच में नहाता है। अचानक वह अपने पैर जमीन की गीली मिट्टी से खींचकर उठाने की कोशिश करता है। बारी - बारी से बायां और दायां पैर खींचकर उठाना चाहता है। बरसात और हवा की आवाज कम होती जाती है। सिर्फ गाने के बोलों की गुनगुनाहट सुनाई देती है। बापू के पैर जमीन पर जम गये हैं और उसके दोनों हाथ धीमे–धीमे ऊपर उठते जाते हैं। भीतर से शोभा की मां की आवाज सुनाई पड़ती है। गाने की आवाज अचानक

बन्द हो जाती है ।)

मां : (परदे के पीछे से) शोभा बेटा, चल अब ! तेरे स्कूल को देर हो जाएगी । शोभा–शोभा बेटे ! देखिए न बापू यह शोभा कहां छिप गई । इसको बुलाइए न भीतर ।

(बापू लाठी टेंकते हुए बाहर आते हैं । बरामदे के ऊपर से ही पुकारते हैं ।)

बापू : शोभा बेटे ! चलो अन्दर (शोभा सुनती है, मगर गरदन हिलाकर अन्दर जाने से मना करती है ।) शोभा ! चलो—स्कूल जाना है ।

शोभा : नहीं बापू !......अभी और नहाऊंगी ।

बापू : (सीढ़ियां उतरते हुए) चलो बेटा । स्कूल जाने में देर हो जाएगी । बरसात भी अब थम चुकी है ।

शोभा : नहीं बापू ! अभी थोड़ी-थोड़ी पड़ रही है । मैं नहीं जाऊंगी ।

बापू : (नीचे उतरकर) अरे निगोड़ी—एक तो वैसे ही पहले से जी चुराती है । आये दिन स्कूल जाने के लिए आनाकानी करती रहती है । आज भी बरसात का बहाना मिल गया !......चलेगी कि नहीं भीतर ? कहने से मानती ही नहीं । बस पढ़ने से जी चुराती रहती है । फिर बीमार पड़ जाएगी तो स्कूल न जाने का एक और बहाना ! चल भीतर—(शोभा को पकड़ने के लिए बापू जल्दी जल्दी चलते हैं । एक बार तो गीली मिट्टी पर उनका पैर भी फिसल जाता है, लेकिन गिरते नहीं) लगता है अब तू मार खाएगी!

(तेज आवाज में) चल अन्दर !

(शोभा दौड़ती-दौड़ती सीढ़ियां चढ़कर बरामदे में खड़ी हो जाती है। गीले बाल और कपड़े निचोड़ती है। फिर अन्दर जाती है। इसी बीच बापू का ध्यान बेटे की ओर जाता है।)

बापू : अशोक ! तू तो चल अन्दर। तुझे तो सरदी-जुकाम भी जल्दी हो जाता है। – और ऐसी बरसात में तू भीगता खड़ा है। बीमार होते भी देर लगती है !

(बापू जाता है। सीढ़ियों के पास ठिठकता है। पीछे मुड़कर देखता है। अशोक वहीं का वहीं ठिठका खड़ा है। बापू को थोड़ा आश्चर्य होता है।)

बापू : अशोक ! सुना नहीं तूने ? चल अन्दर और बदन पोंछ कर सुखा ले।

(अशोक फिर भी चुपचाप खड़ा है। बापू पीछे घूमकर अशोक के पास आता है। उसे हैरानी से ताकता रहता है।)

बापू : इस तरह खामोश क्यों खड़ा है ? तू भी मुझसे मजाक कर रहा है !.....

अशोक : बापू ! मैं पेड़ हूं।

(यह सुनकर बापू खिलखिलाकर हंस पड़ता है।)

बापू : ठीक है, ठीक है। लेकिन अब चल और ठीक से बदन पोंछ। खाना भी तैयार है। खा ले। अभी तुझे बस भी पकड़नी है। देर हो गयी तो तू ही शोर मचाने लगेगा। चल अन्दर। रेखा रोटी बना रही है।

अशोक : कहा तो--मैं पेड़ हूं !

(बापू अशोक का हाथ पकड़ता है। फिर उससे नजरें मिलाने की कोशिश करता है, लेकिन नजर मिल नहीं पाती। वह अशोक के गाल हथेली से थपथपाता है।)

बापू : अशोक ! अशोक !! अरे बेटा अशोक ! (झपटते हुए सीढ़ी के पास पहुंच कर बुलाता है) रेखा ! ओ रेखा बेटी...... !

रेखा : (घर के भीतर से आवाज सुनाई पड़ती है।) अभी आई बापूजी। (रेखा हाथ पोंछती हुई आती है) क्या बात है बापूजी ? इनकी आदत तो हमेशा मजाक करने की है। (फिर अशोक के पास पहुंच कर हंसते हंसते) आज फिर यह क्या मजाक शुरू कर दिया है ? (अशोक की तरफ देखने की कोशिश करती है।) उठो, अन्दर चलो। देखो तो कितने ज्यादा भीग गये हो ! (साड़ी के आंचल से अशोक के चेहरे का पानी पोंछती है।) बदन पोंछ कर, चलो गरम-गरम खाना खा लो। मैं तौलिया ला देती हूं। (चलने को होती है। फिर पीछे देखकर ठिठक जाती है।) अरे तुम तो अभी खड़े ही हो ! (अशोक का हाथ पकड़ती है।) चलो न अब अन्दर। देखो–मेरी अंगीठी जल रही है। तुम खा लो तो बापू जी के लिए भी मैं रोटियां सेंक दूं।

बापू : अशोक ! हर बात की हद होती है ! बहुत हो गया मजाक। अब चल अन्दर। (अशोक तेज छींकता है।)

रेखा : बापूजी, इन्हें तो ठंड लग गई है ।

बापू : मैं तो कब से इससे कह रहा हूं कि चल भीतर और बदन पोंछ ले । वैसे भी तुझे सर्दी - जुकाम जल्दी हो जाता है । लेकिन तू तो मानता ही नहीं । ले अब हो गया न जुकाम ?

रेखा : (अशोक को पकड़ कर) भीतर चलो । सर्दी हो गयी है और तुम्हें बीमार पड़ते देर नहीं लगती ।

(अशोक हिलता-डुलता नहीं । चुपचाप खड़ा है ।)

रेखा : बापूजी ! देखिए न – ये तो हिलते ही नहीं ।

बापू : (अशोक को दूसरी तरफ से पकड़ता है ।) ले, मैं मदद करता हूं । (जरा तेज आवाज में बोलते हैं) अरे अशोक, अब तो चल भीतर ।

रेखा : ले चलो अन्दर । (फिर अशोक को देखती है । बापू जी यह तो कुछ सुनते ही नहीं । चलते भी नहीं हैं । सरदी भी हो गई है और फिर देह भी गरम लग रही है । (रुकती है । फिर कुछ सोचकर) मैं पड़ोस से दिनेश भाई को बुलाती हूं । इन्हें उठाकर अन्दर ले चलें ।

बापू : हां-हां – दिनेश को बुलाओ ।

रेखा : (पुकारती हुई) अरे दिनेश भाई !

दिनेश : (परदे के पीछे से आवाज सुनाई देती है) हां–रेखा बहन ! क्या काम है ?

रेखा : यह देखो–तुम्हारे भाई को क्या हो गया है ? जरा एक मिनट के लिए आओ तो ।

दिनेश : (परदे के पीछे से) अभी आया ।

(दिनेश मंच पर आता है। एक नजर बापू, रेखा और अशोक पर डालता है। फिर बोलता है।)

दिनेश : क्या हुआ अशोक भाई को ? (फिर अशोक की तरफ देखते हुए) अरे अशोक भाई ! इस तरह कैसे खड़े हो ?

बापू : दिनेश, देख तो बेटा ! यह अशोक न चलता है न बोलता है।

दिनेश : अशोक भाई, चलो अन्दर। सचमुच तुम तो बहुत ज्यादा भीग गए हो।

बापू : दिनेश, इसे तो उठाकर ले जाना पड़ेगा।
(दिनेश और बापू अशोक को उठाने की कोशिश करते हैं। लेकिन अशोक हिलता ही नहीं। फिर दिनेश नीचे बैठकर अशोक के पैर उठाने की कोशिश करता है। दिनेश के जोर लगाने की आवाज सुनाई पड़ती है।)

दिनेश : ऊंह...... ऊंह ! लगता है कि इनका तो जमीन में पैर जम गया है। जरा भी नहीं हिलता।

रेखा : दिनेश भाई, तुम एक काम करो। बगल से डाक्टर माथुर को बुला लाओ। इन्हें जुकाम हो गया है। वे कोई दवा दे देंगे तो ये ठीक हो जाएंगे।

दिनेश : हां, यह ठीक है। अभी डाक्टर साहब को बुलाता हूं।
(दिनेश चला जाता है।)

रेखा : बापूजी, इन्हें यह क्या हो गया है ?

बापू : कुछ नहीं बेटा, अभी माथुर साहब आकर इन्जेक्शन लगा देंगे, उससे ठीक हो जाएगा। (थोड़ा रुककर)

हां तुम थोड़ी सी चाय बनाओ। उसमें चार-छह तुलसी की पत्तियां भी डाल देना।

रेखा : अभी बनाकर लाती हूं।

(रेखा गिलास में तुलसी की पत्ती डालकर बनायी चाय ले आती है। गिलास बापू को पकड़ा देती है।)

बापू : एक चम्मच भी लेकर आ। शायद गिलास से न पी सके।

(रेखा चुपचाप चम्मच लेने चली जाती है। बापू अशोक से चाय पीने की मनुहार करते हैं। लेकिन अशोक चाय नहीं पीता। इसी बीच रेखा चम्मच लाकर बापू को देती है।)

बापू : (गिलास से चम्मच में चाय लेकर अशोक के होठों तक ले जाकर) ले बेटे, थोड़ी सी यह चाय पी ले। तुलसी की है। गरम-गरम अन्दर जाकर फायदा करेगी। (अशोक चम्मच से पीता है। लेकिन पांच-छह चम्मच पीकर और पीने से मना कर देता है।)

रेखा : बापू जी, मुझे भीतर ही भीतर बड़ी घबराहट हो रही है।

बापू : घबराने की कोई बात नहीं बेटी। सब ठीक हो जाएगा। तेरा दिल जरा कमजोर है न, इसीलिए..... वह देख—आ गए डाक्टर साहब।

(डाक्टर माथुर और दिनेश अशोक के पास आते हैं। दिनेश डाक्टर का बैग नीचे रख देता है।)

डाक्टर : क्या बात है बापूजी ? क्या हुआ अशोक को ?

बापू : आप ही देखिए न डाक्टर साहब। हमें तो कुछ समझ में नहीं आता। लगता है, ठंड लग गयी और जुकाम हो गया है।

रेखा : इन्हें जुकाम बड़ी जल्दी होता है। और आज तो ये बरसात में खूब भीगे हैं।..... हाँ, बापू ने थोड़ी देर पहले इन्हें तुलसी की चाय पिला दी है।

(इस बीच डाक्टर पहले अशोक की नाड़ी और फिर आले (स्टेथेस्कोप) से छाती देखते हैं।)

डाक्टर : अशोक को सर्दी हो गयी है और थोड़ा सा बुखार भी है। बापूजी ने तुलसी की चाय पिला कर अच्छा किया। सर्दी-जुकाम में तो तुलसी की चाय बहुत फायदेमन्द होती है। मैं एक इन्जेक्शन लगाये देता हूं। जल्दी ही ठीक हो जाएंगे।

(डाक्टर बैग खोलकर इन्जेक्शन निकालते हैं और उसमें दवा भरते हैं। फिर अशोक के बाएं हाथ में इन्जेक्शन लगाने की कोशिश करते हैं। सुई चमड़ी में घुसते ही टूट जाती है।)

डाक्टर : अरे, यह तो सुई ही टूट गई। अशोक का बदन तो काठ की तरह सख्त लगता है। कुछ समझ में नहीं आया। (वह अशोक का हाथ दबाकर देखता है। फिर बापूजी की तरफ देखते हुए)—आप तो कह रहे थे कि थोड़ी देर पहले इसने चाय पी है?

बापू : बड़ी मुश्किल से चार-छह चम्मच पिलायी थी।

डाक्टर : कुछ अजीब सा लग रहा है। बापूजी, आप किसी

बड़े डाक्टर को दिखाइए। यह मेरे बस का नहीं लगता।

रेखा : लेकिन............(डाक्टर माथुर बैग उठाकर चलने लगते हैं) बापूजी! (भरे गले की आवाज में) अब क्या होगा बापूजी?

दिनेश : भाई, मुझे तो यह किसी भूत-प्रेत का प्रकोप लगता है। अपने पीर साहब को बुलाना चाहिए।

बापू : क्या? हां हां! ठीक है। दिनेश तुम जल्दी जाकर अपने पीर साहब को बुला लो।

दिनेश : अभी बुलाकर लाता हूं। दादाजी।
(दिनेश चला जाता है।)

बापू : (रेखा से) तू चिन्ता मत कर बेटी! यह जरूर किसी गलत साये का असर है। आते-जाते कहीं अशोक का पैर पड़ गया होगा। यह पीर चुटकी में साये को उतार भगाएगा।—हां, जब तक पीर आए, तुम शोभा को स्कूल भेज दो।

रेखा : ठीक है बापूजी। (पुकार कर) अरे शोभा बेटी, तू तैयार हो गई? खाना खा लिया?
(शोभा स्कूल जाने के लिए बस्ता लेकर आती है।)

शोभा : आज तो सचमुच बड़ी देर हो गई मां! (सीढ़ियां उतर कर दौड़ते-दौड़ते) मां, पिताजी नमस्ते! बापूजी, आपको भी भी नमस्ते।

बापू : नमस्ते बेटो। होशियारी से जाना। रास्ते में कीचड़ गन्दगी होगी, कहीं गिर मत जाना।

(दिनेश का प्रवेश । पीछे-पीछे पीर साहब भी आते हैं ।)

दिनेश : लो आ गए पीर साहब । (फिर पीर की तरफ देखकर) यह रहे हमारे अशोक भाई । इनका पैर चिपक गया है, पीर साहब ।

पीर : (अशोक को एकटक देखता रहता है । फिर उसका एक फेरा लगाता है और दाने फेंकता है) भूत है बापू । चुटकी में इसे भगाए देता हूं । तुम काली उड़द, काला तिल और सिन्दूर मंगाओ । हां––एक काला कपड़ा और पानी का कलसा भी मंगा लो ।

रेखा : सारा सामान अभी लायी । (जल्दी से घर के अंदर चली जाती है ।)

पीर : औलिया साहब की दया से बड़े-बड़े भूतों को भगा दिया है । आप लोग जरा भी न घबरायें ।

(रेखा सब चीजें तुरन्त लाकर पीर के पास रख देती है । खंजड़ी की आवाज सुनाई पड़ती है । पीर झूमने लगता है ।)

दिनेश: माफ करो ! माफ करो ! अशोक को जल्दी ठीक कर दो !

बापू : क्षमा करो भगवान ! भूलचूक माफ़ कर दो !

पीर : पच्छिम की जोगन बिगड़ी है तू ! अपने हथकंडे दिखाने के लिए तुझे कोई और नहीं मिला ? यह सीधा-साधा बम्हन ही मिला । अब खड़ी रह तू !

(पीर झूमता है, हाथ पटकता है और जोर-जोर से चीखता है ।)

दिनेश : माफ करो जोगन माता! ——क्षमा करो !

(पीर का झूमना धीरे-धीरे कम होता जाता है। उसके चिल्लाकर 'पानी' कहने के साथ ही दिनेश पीर को पानी का लोटा देता है। पीर पानी पीता है। फिर काले कपड़े में काला तिल, काला उड़द और सिंदूर रखकर खड़ा होता है। दोनों हाथों में ये सभी चीजें उठाकर अशोक के सिर के चारों तरफ घुमाता है।)

पीर : बापू साहब, अब आप बेफिक्र हो जाइए। चौराहे पर जाकर यह सिर का उतारा डालते ही आपका बेटा चलने लगेगा।

(पीर जाता है। उसके पीछे-पीछे दिनेश भी जाता है।)

बापू : अब चलो अशोक। सब बखेड़ा दूर हुआ।

रेखा : चलो और भीतर थोड़ा आराम कर लो।

(बापू और रेखा धीरे-धीरे चलने को होते हैं। जरा आगे बढ़कर दोनों ठिठकते हैं। बापू मुड़कर अशोक के पास आते हैं।)

बापू : अशोक बेटा, अब अन्दर चल। (अशोक का हाथ पकड़ कर) चलो बेटा !

(रेखा जल्दी से अशोक के पास आती है। उसका कंधा पकड़ती है और बिफर पड़ती है। चीख कर वह अशोक के पैरों से लिपट जाती है।)

रेखा : बापूजी ! बापूजी ! मैं तो लुट गयी। मेरा तो सब कुछ छिन गया। यह क्या हो गया बापूजी! (सिसकती है।)

बापू : धीरज रख बेटी ! (रेखा की हिचकियां सुनाई देती हैं।) तू रो मत। सबर कर। अशोक कल तक ठीक हो जाएगा।

(रेखा रोती-रोती अपना सिर बापू की तरफ उठाती है। बापू का धीरज बंधाता हाथ रेखा के माथे पर है। मंच पर धीरे-धीरे अंधेरा फैलता है। परदा गिरता है।)

दूसरा दृश्य

[आधी रात के बाद का समय। चांदनी की रोशनी में पेड़ खड़ा है। हवा के झोंकों से हिल रहा है। धीरे-धीरे हवा रुक जाती है। पेड़ का हिलना भी बन्द हो जाता है। बापू मंच पर लाठी के सहारे प्रवेश करते हैं। पेड़ बन गये अपने पुत्र अशोक के पास आकर खड़े रहते हैं। प्रेम के उफान में बेटे को बांहों में भर लेते हैं। उनके हाथ की लाठी गिर जाती है। बापू सिसकते हैं। आवाज निकालना चाहते हैं लेकिन रोक लेते हैं। सिर्फ उनका शरीर हिलता दीखता है। कुछ क्षणों बाद बेटे से अलग हो जाते हैं। नीचे पड़ी लाठी उठाते हैं। बेटे की ओर ताकते रहते हैं

और दुख से परेशान पैर रखते हुए घर की तरफ जाते हैं। बापू के जाने के बाद रेखा आती है। वह आकर पेड़ बन गए पति को दुशाला ओढ़ाने की कोशिश करती है। फिर कंधों पर हाथ रखकर उसकी ओर ताकती रहती है। उसका हाथ फिसल जाता है। वह पति के पैरों में लोट जाती है। फिर ऊपर देखकर कहती है–]

रेखा : तुम्हें यह क्या हो गया है ? कुछ बोलते क्यों नहीं? तुम इस तरह क्यों रूठे हो ? कुछ तो बोलो। कैसे-कैसे सपने थे हमारे। शोभा को पढ़ा-लिखा कर बड़ी करेंगे। उसका अच्छे घर में ब्याह करेंगे। बापू जी भी कहते हैं कि वे अनपढ़ रह गए और उसका नुकसान भी उठाया। वह तो भला हो प्रौढ़ शिक्षा वालों का, जिन्होंने उन्हें बुढ़ापे में भी थोड़ा-सा पढ़ा दिया। कम से कम मोटी-मोटी खबरें तो पढ़ लेते हैं। लेकिन अब घर में किसी को अनपढ़ नहीं रहने देंगे। लड़कियों का तो आज के जमाने में पढ़ना और भी जरूरी है। (थोड़ी देर रुक कर बात आगे बढ़ती है–) थोड़े रुपये इकट्ठा हो जाएं तो इस घर को भी कुछ और बढ़ाएंगे।...... लेकिन तुम तो मुझे बीच मझधार में छोड़कर चुप हो गये हो। सच कहती हूं, मुझ से नहीं जिया जाता इस तरह। कुछ तो बोलो। तुम नहीं बोलोगे तो मैं भी यहीं तुम्हारे पैरों के पास बैठी रहूंगी। (रेखा की सिसकियों की आवाज सुनाई पड़ती है। बापू जी घर से निकल कर बरामदे में आते हैं।

रेखा के रोने की आवाज सुनते हैं। फिर सीढ़ियां उतर कर रेखा के पास आते हैं।)

बापू : बेटी, चल भीतर घर में। अब इस तरह रोने से क्या होगा ?

रेखा : (रोते-रोते) नहीं बापू जी, मैं यहां से नहीं उठूंगी।

बापू : अरे तू ही अगर इस तरह हिम्मत हारेगी तो दूसरों का क्या होगा ? सारा दिन तू कुछ खाती भी नहीं, बस रोती ही रहती है। जो होना था वह हो गया। अब कम से कम शोभा का तो ख्याल कर। हे भगवान !.. ... शोभा भी भूखी ही सो गयी है। उठ बेटी, तेरा इस तरह बिलखना मुझसे नहीं देखा जाता।

(अचानक शोभा की डर और रुलाई की मिली-जुली आवाज सुनाई पड़ती है।)

शोभा : (परदे के पीछे से) मां ! तू मुझे छोड़कर कहां चली गई मां ? मुझे डर लगता है। तुम मेरे पास आ जाओ।

बापू : (रेखा से) उठ बेटा, देख शोभा जाग पड़ी है। वह रो रही है।

रेखा : बापू जी, मैं नहीं जाऊंगी।

(शोभा के रोने की आवाज सुनाई पड़ती है।)

बापू : चल उठ रेखा बेटी ! शोभा कितनी घबरा गई है। जा उसे देख।

(नहीं नहीं करती हुई भी रेखा उठती है। शोभा

के रोने की आवाज की तरफ खिचती है तो दूसरे ही क्षण अशोक की तरफ देखती है। शोभा के रोने की आवाज आती ही रहती है। रेखा उस आवाज की तरफ खिचती जाती है। बापू भी धीरे-धीरे डग भरते घर की तरफ जाते हैं। उनकी लाठी की ठुक-ठुक आवाज सुनाई पड़ती है। मंच पर रोशनी हल्की पड़ती जाती है। फिर अंधेरा हो जाता है। परदा गिरता है।)

तीसरा दृश्य

[कुछ महीने बाद ! मंच पर भोर के उजाले की रोशनी धीरे-धीरे फैलती है। साथ ही 'जाग मुसाफिर भोर भई…' भजन की पंक्ति भी सुनाई पड़ती है। चिड़ियों की आवाज। मंच पर पूरे सवेरे की रोशनी फैल जाती है। हाथ में बस्ता लिये शोभा की दो सहेलियां आती हैं।]

पहली सहेली : शोभा को जल्दी बुला। वह अभी तैयार भी नहीं हुई होगी। देख तो—आज कितनी देर हो गयी है !

दूसरी सहेली : लेकिन आज तो हड़ताल होने वाली है। मुझसे विमला कह रह थी कि कल सब स्कूलों में हड़ताल रहेगी।

पहली सहेली : तब तो बड़ा मजा आएगा ! मैंने तो बेकार ही भूगोल का रट्टा लगाया।

दूसरी सहेली : मुझे तो भूगोल पढ़ना अच्छा ही नहीं लगता। मैंने तो आधा ही किया है।

पहली सहेली : अरे शोभा ! स्कूल चल।

दूसरी सहेली : शोभा ! –ओ शोभा !

शोभा : (घर के भीतर से ही जवाब देती हुई) क्यों चिल्ला रही है? अभी आती हूं। जरा रुक जा।

पहली सहेली : वह तो अभी बाल कढ़वा रही होगी : (शोभा बस्ता लिये बरामदे में आती है। तीनों हड़ताल और भूगोल के बारे में बातें करती हुई स्कूल की तरफ जा रही हैं। ···अचानक बापू की आवाज सुनाई पड़ती है। वे हनुमान चालीसा गाते हुए मंच पर आते हैं। नहाकर आ रहे हैं। आनंद मगन चालीसा गा रहे हैं। अपनी लाठी दीवार से टिका देते हैं। चालीसा का पाठ चालू है। भींगे गमछे को निचोड़ते हैं और उसे एक नीची डाली पर सूखने डालते हैं। फिर अपनी लाठी लेकर दिनेश के घर की तरफ जाते हैं।)

बापू : अरे बेटा दिनेश, जरा आज का अखबार तो देना ।

दिनेश : (परदे के पीछे से) अच्छा बापूजी, अभी लाता हूं। (रेखा घर से बाहर आती है । जिस पेड़ की डाली पर गमछा सूखने को पड़ा है, उसकी जड़ में लोटे से पानी डालने का अभिनय करती है। उसके चेहरे पर खुशी है । पानी डालने के बाद पेड़ की डालियों की तरफ देखती रहती है। सहलाकर छूती है । बापू हाथ में अखबार लिए आते हैं।)

रेखा : बापू जी, देखिए तो--कैसी नन्हीं-नन्हीं कोंपलें फूटी हैं !

बापू : (पास आकर देखते हुए) हां बेटी, बहुत सारी कोंपलें फूटी हैं !

रेखा : दोपहर में तो यहां सुन्दर छाया होती है !

बापू : सवेरे इस पर चिड़ियां भी तो बैठकर चहचहाती हैं !

रेखा : लेकिन बापूजी कल दोपहर में तो एक कौवा इस पर बैठकर कांव-कांव करने लगा । फिर उसने डाली पर दो-तीन बार चोंच मारा। मैं तो सिहर उठी । फिर किसी तरह ताली बजाकर उसे उड़ाया । मगर वह तो ऐसा ढीठ कि उड़ा ही नहीं। वह तो चोंच मारे ही जा रहा था। मुझसे तो रहा नहीं गया । कंकड़ मार कर उड़ाया । लेकिन वह तो ऐसा बेशरम कि थोड़ी देर बाद फिर आकर बैठ गया। कांव-कांव

करता जाए और डाली पर चोंच मारता जाए। फिर तो आपकी लाठी लेकर मैं यहीं खड़ी रही।

बापू : अरे बेटी ! आज भोर में मुझे एक अजीब सपना आया। सपने में अशोक दिखाई पड़ा।

रेखा : (चौंककर) अरे—सच बापू जी ?

बापू : लेकिन वह कैसा था, मालूम है ? बिल्कुल नन्हा-सा ठुमक-ठुमक कर चलता हुआ और नंग-धड़ंग।

रेखा : (लजा कर मुसकराती हुई) आज ही भोर में देखा था बापूजी ?

बापू : हां बेटी ! मैं तो यहीं आंगन में बैठा अखबार पढ़ रहा था। वह मेरे सामने आकर खड़ा हो गया। 'बापूजी बापूजी' सुनकर मैंने अखबार से निगाह हटाकर देखा तो उसने हाथ की मुट्ठियां बन्द कर रखी थीं। अपनी एक मुट्ठी आगे करके कहने लगा, 'मुट्ठी खोलो बापू'। मैंने उसकी मुट्ठी खोलने की कोशिश की, पर मुझसे वह खुली ही नहीं। मैंने भरपूर कोशिश की पर वह खुलती ही नहीं थी। (रेखा आंचल का कोर दांतों से दबाकर मुसकराती है) फिर वह शैतान ठहाका लगाकर हंस पड़ा। बोला—बापूजी, फूंक मारो तो खुल जाएगी। मैंने उसकी दाहिनी मुट्ठी में फूंक मारी तो सचमुच हथेली फौरन खुल गयी। (रेखा आश्चर्य से देखने लगती है) मालूम है, उस मुट्ठी में क्या था ?

रेखा : (चौंककर) क्या था बापूजी ?

बापू : सोने की मोहर !

रेखा : सोने की मोहर ?

बापू : हां बेटी, असली सोने की मोहर। चमचमा रहा था सोना। उसके हाथ से मैंने वह सोने की मोहर ले ली। फिर दूसरी मुट्ठी खोलना ही चाहता था कि तभी मेरी आंख खुल गयी। कैसा अजीब सपना था !

(रेखा कुछ क्षण बापू की तरफ आश्चर्य से देखती रही। फिर संकोच से उठते हुए बोली)

रेखा : अच्छा बापूजी, मैं चल रही हूं। आज तो खाने में कुछ खास ही बनाना है। शोभा बोल गयी है।

बापू : हां-हां, मेरी चटोरी पोती को खीर बहुत पसन्द है। हो सके तो बना लेना।

(रेखा अन्दर जाती है। बापू भी पीछे-पीछे जाते हैं। याद आने पर पलट कर पेड़ पर सुखाए हुए अंगोछे को कन्धे पर डालते हैं। एक क्षण के लिए अचानक ठिठके रह जाते हैं। जैसे फिर सपने की याद आ गयी हो – इस तरह हथेली में सोने की मोहर देखते हैं। चौंककर हंसते हुए घर के अंदर जाते हैं। फिर शोभा और उसकी सहेलियां मंच पर आती हैं। शोभा बरामदे में जाकर बस्ता रखती है। इस बीच उसकी दोनों सहेलियां उसी

पेड़ की डालों पर अपने-अपने बस्ते लटका देती हैं। शोभा भी लौटकर सहेलियों के पास आ जाती है। तीनों आमने-सामने खड़ी हैं।)

शोभा : तैयार हो ? चलो।

दोनों सहेलियां : हां, तैयार।

शोभा : ठीक है। अब शुरू करें।

(तीनों लड़कियां एक-दो-तीन गिनते हुए रस्सी कूदने लगती हैं। दस की गिनती के बाद कूदने की रफ्तार तेज हो जाती है।)

पहली सहेली : (जरा रुककर) अरे ! तुम लोगों ने तो एकदम तेजी से कूदना शुरू कर दिया। थोड़ा ठहरो !

(शोभा और दूसरी सहेली रुक जाती हैं। घर के भीतर से रेखा की जोर से आवाज आती हैं।)

रेखा : शोभा ! जरा भीतर तो आना।

शोभा : (सहेलियों से) मैं अभी आती हूं। मां बुला रही हैं।

(दोनों सहेलियां पेड़ पर लटकाए हुए अपने बस्ते उतारती हैं। शोभा उन्हें देखती है।)

शोभा : अरे ! तुमने तो मेरे पिताजी के ऊपर बस्ता लटका दिया !

पहली सहेली : यह तेरे पिताजी हैं !

शोभा : हां।

दूसरी सहेली : (चौंककर) अरे यह तो पेड़ है पगली !

पहली सहेली : हां, यह तो पेड़ है। यह तेरे पिताजी कैसे हुए ?

शोभा : हां–ये मेरे पिताजी हैं। (फिर बापू की तरफ देखकर) ये मेरे पिताजी हैं न बापूजी ?

(शोभा लपककर पेड़ के तने को दोनों बांहों से घेरकर खड़ी हो जाती है। फिर उसका कान पेड़ से लगते ही उसे गाने की आवाज सुनाई पड़ने लगती है। उसके चेहरे पर मुस्कराहट खिल पड़ती है। उसकी आंखें बन्द हैं और वह चुपचाप गाने की गूंज सुन रही है। पेड़ से उसका कान अलग होते ही गूंज बन्द हो जाती है।

शोभा : मेरे पिताजी कितना अच्छा गा रहे हैं !

पहली सहेली : गा रहे हैं ?

शोभा : बहुत अच्छा गा रहे हैं ! तुमने नहीं सुना?

(दोनों सिर हिलाकर मना करती हैं।)

शोभा : तुम्हें सुनना है ?

(दोनों सिर हिलाकर हां हां कहती हैं।)

शोभा : ठीक है, लो सुनो।

(दोनों सहेलियां पेड़ के तने से कान लगा कर सुनने का अभिनय करती हैं। कुछ सुनाई नहीं पड़ता। दोनों कान हटा लेती हैं।)

दोनों सहेलियां : (एकसाथ) हमें तो कुछ सुनाई नहीं पड़ा।

शोभा : मुझे तो सुनाई पड़ रहा है।

(शोभा पेड़ के तने के पास खड़ी रहती है)

दोनों सहेलियां : अब हम चलते हैं। देर हो जाएगी।

(दोनों सहेलियां जाती हैं। गाने की गूंज फिर सुनाई पड़ती है। शोभा की आंखें बन्द हैं। चेहरे पर मुसकान है। पेड़ हिल रहा है—मानो झूम रहा हो। शोभा भी धीरे-धीरे झूमती रहती है। मंच पर रोशनी धीरे-धीरे कम होती जाती है। परदा गिरता है।)

चौथा दृश्य

[सुबह की रोशनी फैली हुई है। शोभा पेड़ के नीचे बैठी अपना पाठ याद कर रही है। पाठ कविता का है। वह रट ही रही होती है तभी घर के भीतर से रेखा आती है। हाथ में थाली होने और शोभा के पास बैठकर रेखा फूलों की लड़ियां पिरोने का अभिनय करती है]

रेखा : कविता याद कर रही है शोभा ?

शोभा : हां मां ! कल मेरा इम्तहान है।

रेखा : हो गयी याद ?

शोभा : तुम सुन लो न ! देखो–यह कविता।
(शोभा रेखा को किताब पकड़ाती है)

रेखा : ठीक है, चल सुना।
(याद की हुई कविता शोभा अपनी मां रेखा को सुनाती है। लेकिन बीच-बीच में कहीं लड़खड़ा जाती है।)

रेखा : कहां हुई है याद ठीक से ?

शोभा : मां जरा सी तो गड़बड़ होती है।

रेखा : तो इस जरा सी गड़बड़ को ठीक कर डाल न ! खूब अच्छी तरह याद कर ले इस कविता को। (शोभा जोर-जोर से कविता रटने लगती है। रेखा माला गूंथ रही हैं। बाहर से बापू आते हैं। कुरता, धोती, सदरी और सिर पर टोपी पहने हैं। हाथ में थैला है। शोभा की आवाज सुनकर बापू खुश हो जाते हैं और चुपके-चुपके शोभा के पास आकर पीछे से लाठी लम्बी करके शोभा के कान से छुआते हैं। शोभा चौंक कर देखती है। बापू हंस पड़ते हैं।)

शोभा : मैं तो डर ही गयी, बापू जी ! (बापू हंसते हैं। पेड़ के नीचे पड़ी कुरसी पर बैठते हैं और टोपी उतार कर झोले में रखते हैं।)

बापू : शोभा बिटिया, जरा इधर तो आ। (शोभा बापू के पास जाती है। बापू सदरी की भीतरी जेब में से कुछ निकालते हैं।) देख तो–यह क्या है ?

शोभा : यह तो फोटो है बापू जी। लाओ––मुझे देखने के लिए दो। (फोटो लेकर देखती है।) अरे बापू जी यह तो आप हो ! यह मां है, बीच में मैं हूं और यह पिताजी हैं।

(रेखा भी सारी बातें सुनती खड़ी थी। फिर खुशी से पास आ जाती है।)

रेखा : ला तो शोभा, मुझे भी देखने दे फोटो। (शोभा

के हाथ से फोटो ले लेती है।) अरे वाह ! बापू जी, कितना सुन्दर फोटो है ! शोभा की तो बहुत अच्छी तस्वीर आयी है।

शोभा : मेरा फोटो तो अच्छा आता ही है। जो लेने वाला आया था, उसके पास कितना बढ़िया कैमरा था!

रेखा : (अचानक बीच में बात को बदलते हुए) बापू जी उस चैक का क्या हुआ ?

बापू : बैंक में जमा करा दिया। (शोभा की तरफ देखते हुए) शोभा बेटे यह थैला ले जा भीतर। तेरे लिए मिठाई लाया हूं। मिठाई तो तुझे बहुत अच्छी लगती है न ?

शोभा : हां बापूजी, बहुत ही अच्छी लगती है। लाओ दो थैला। (जल्दी से थैला लेकर जाने लगती है।)

रेखा : माला और फूल भी लेती जा शोभा।
(रेखा फूल की थाली शोभा को दे देती है। शोभा सब चीजें लेकर अन्दर जाती है।)

बापू : बेटी सवेरे कोई आया था ?

रेखा : नहीं, बापू जी। आज तो दिन भर कोई नहीं आया। कुछ चैन है। इतने सारे लोग देखने के लिए आते हैं कि मैं तो थक जाती हूं। लेकिन बापूजी, इससे हमें पैसे तो अच्छे मिल गये न ?

बापू : वह तो मिलना ही था। यह कोई ऐसी-वैसी खबर है– आदमी का पेड़ हो जाना। अंग्रेजी अखबार वालों ने तो खाली फोटो लेने और बातें

करने पर ही चैक दे दिया।

रेखा : और बापूजी! वह जो बम्बई से आया मोटा सा नाटा आदमी......

बापू : उस गोरी लड़की के साथ ?

रेखा : हां हां – वही उसने भी अच्छे रुपये दिये थे।

बापू : देता क्यों नहीं ? यह कोई ऐसी-वैसी घटना है ?

रेखा : मैं बाहर जाती हूं तो दादाजी, हर जगह लोग मुझसे बड़ी पूछ-ताछ करते हैं। तरह-तरह के सवाल करते हैं।

बापू : अरे बेटा ! यह तो भगवान की लीला है। वह जो कुछ करते हैं अच्छे के लिए ही करते हैं। (मंच पर अंग्रेजी पहनावा पहने एक गोरी जवान लड़की आती है।)

युवती : माफ कीजिए ! –मिस्टर पांडे यहीं रहते हैं ?

रेखा : (बापू को बुलाती है) बापू जी !

बापू : (गोरी युवती को देखकर) अच्छा ! आइए-आइए। बैठिए। मैं ही पांडे हूं।
(युवती दादा के पास पड़ी हुई कुरसी पर बैठती है। पर्स में से कार्ड निकाल कर देती है।)

युवती : मेरा नाम मिस किटी है। एक अखबार की तरफ से आई हूं। मुझे जानकारी मिली है कि आपके यहां ही वह अजीब घटना हुई है। ... आदमी के 'पेड़' बन जाने की !

बापू : हां–हमारे यहां ही हुई है ! आप भी देखिए– हमारा यह अशोक ! अब पेड़ हो गया है ।
(मिस किटी अशोक की तरफ देखती है और ताज्जुब में पड़ जाती है ।)

मिस किटी : ओह ! कितने आश्चर्य की बात है ! यह पेड़ आपका बेटा है ?

बापू : हां बहनजी, यह मेरा बेटा है और यह मेरे बेटे की बहू है ।

(रेखा हाथ जोड़कर किटी को नमस्कार करती है ।)

मिस किटी : ओह ! नमस्ते ! आप मुझे सारी बात बताएंगी कि यह सब कैसे हुआ ।

बापू : (रेखा के कुछ बोलने से पहले ही) हां-हां । क्यों नहीं ।

मिस किटी : (पर्स से कागज और कलम निकाल कर कुछ लिखती हैं) जरा एक मिनट रुकिए । हां अब बताइए ।

रेखा : कुछ ऐसा हुआ कि एक दिन . . . .

मिस किटी : (बीच में टोंकते हुए) क्या उस दिन की तारीख बता सकती हैं ।

रेखा : तारीख ?

बापू : 17 जुलाई । लेकिन मिस किटी, आपको इन सब पुरानी बातों की क्या जरूरत है ?

मिस किटी : यह सारी कहानी मैं तस्वीरों के साथ अपने अखबार में भेजूंगी। हमारे अखबार की लाखों कापियां बिकती हैं। उसी के लिए इस विषय पर एक खास लेख तैयार करने के लिए मुझसे कहा गया है।

बापू : अच्छा—यह बात है ! लेकिन बहन, ऐसा है कि इससे पहले जो कोई भी अखबार वाला आया है, उसने कुछ रुपये जरूर दिये हैं।

मिस किटी : मैं समझ गयी। आप चिन्ता न करें पांडेजी! देखिए इस कहानी और कुछ तस्वीरों के लिए मैं अभी आपको फाइव थाउजेंड का—मेरा मतलब है पांच हजार रुपये का चैक दिये देती हूं।

बापू : पांच हजार··· (यह बापू ने चौंककर कहा था, लेकिन कहने का तरीका ऐसा था जैसे रकम बहुत छोटी हो।)

मिस किटी : ये पांच हजार रुपये तो एडवान्स (बयाना) हैं। थोड़े ही दिनों में पांच हजार रुपये और आपको मिलेंगे।

बापू : ठीक है—ठीक है। आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। चलिए, मैं आपको पूरी बात ब्योरेवार बताता हूं। (दोनों खड़े हो जाते हैं। टहलते हुए बातें करते हैं।) देखिए

17 जुलाई की सुबह की बात है। उस दिन धुंआधार बारिश हो रही थी। हमारी शोभा –अशोक की बेटी बारिश में नहा रही थी।

रेखा : शोभा! –शोभा बेटी!

(शोभा आती है।)

बापू : यह रही हमारी शोभा। (शोभा की ओर देखकर) इधर आओ बेटी। यह मुनिया बड़ी शैतान है बहन जी। यह बारिश में नहा रही थी। तभी हमारे अशोक को भी नहाने की सूझी, और शोभा भी उसे अपने साथ खींच ले गयी।

मिस किटी : (शोभा की तरफ ध्यान जाने पर) माफ कीजिए, बुरा मत मानिएगा–फोटो खींचने के लिए यह बहुत अच्छा मौसम है, मैं कुछ तस्वीरें खींच लूं! फिर आराम से आप मुझे पूरी कहानी लिखवाइएगा।

बापू : हां-हां, ठीक है। फोटो खींचने के लिए अच्छा मौसम है। अच्छे आएंगे।

(मिस किटी कलम-कागज कुरसी पर रखती है। अपना कैमरा उठाकर खोलती है और कुछ तस्वीरें खींचती है। वह कैमरा रखने को होती हैं कि तभी रेखा उनसे कहती है।)

रेखा : किटी बहन, मुझे कहने में संकोच हो रहा

है,–क्या आप हम सबकी एक साथ फोटो नहीं खींचेंगी ?

मिस किटी : अरे जरूर। यह तो बहुत अच्छा कहा आपने। मुझे याद दिला दिया। इस पेड़ के साथ आप सब लोगों का एक फोटो जरूर खींचूंगी। आप भी आ जाइए बापूजी !

(सब ठीक से इकट्ठे हो जाते हैं। एक तरफ रेखा पेड़ के पास खड़ी है। दूसरी तरफ बापू खड़े हैं और पेड़ के पास जमीन पर शोभा बैठ जाती है।)

रेखा : (अचानक) मैं जरा साड़ी बदल लूं बहन ?

मिस किटी : अरे नहीं-नहीं, कोई जरूरत नहीं। तुम्हारी तस्वीर इसी साड़ी में सुन्दर आएगी। (फिर तीनों से) अब थोड़ा-सा मुसकराइए। हिलिएगा नहीं।

बापू : जरा एक मिनट–

(बापू आंख से चश्मा उतारकर कुर्ते से साफ करते हैं, फिर पहन लेते हैं और चेहरे पर मुस्कराहट लाकर चुपचाप खड़े हो जाते हैं।)

मिस किटी : अब आप लोग तैयार हो जाइए। (फिर कैमरे का बटन दबाती है।) बस जरा-सी देर और इसी तरह रहिए। एक फोटो दूसरी तरफ से भी ले लूं। (एक बार फिर कैमरे का बटन दबाती है।) · · · ·

ठीक है, बहुत अच्छी तस्वीरें आएंगी ।

रेखा : बहन, फोटो के बारे में एक बात सोच रही हूं । कहूं ?

मिस किटी : हां-हां, कहिए न ?

रेखा : मैं रोज इन्हें (पेड़ की तरफ इशारा करती हुई) पानी देती हूं । एक फोटो ऐसी भी ले लीजिए न, जिसमें मैं पानी देती हुई दिखाई पड़ूं ।

मिस किटी : वाह, क्या बात है ? कितनी अच्छी बात सोची है आपने । चलिए, आइए–हो जाए एक फोटो ।

(रेखा घर के भीतर जाकर लोटे में पानी भरकर लाती है । पेड़ के पास जाती है और झुककर उसकी जड़ों में पानी डालती है ।)

मिस किटी : (इशारा करते हुए) जरा बगल में–इस तरफ ।

(रेखा किटी के कहे अनुसार बगल में खड़ी होती है । उसके सिर का पल्लू खिसक जाता है, इसलिए हाथ के लोटे को जमीन पर रखती है, फिर माथे का पल्ला सरकाती है । लोटा लेकर पानी डालने का अभिनय करती है । उसके चेहरे पर मुसकान है । कैमरे की

तरफ देखती है। मिस किटी कैमरे का बटन दबाती है।)

मिस किटी : बहुत-बहुत धन्यवाद ! अब चलिए, मुझे पूरी कहानी बताइए। और हां, अगर आपके बेटे की पुरानी तस्वीरें हों तो मुझे वे भी चाहिए।

बापू : हां है। अशोक ने जब दसवीं की परीक्षा पास की थी, तब का खींचा हुआ फोटो है।

रेखा : और हम दोनों की साथ खिंची एक फोटो है।

मिस किटी : तब तो बहुत अच्छा है ! चलिए अब मुझे पूरी कहानी सुना दीजिए।

(बापू हंसते हैं और मिस किटी को सारी बातें बताने लगते हैं। कापी-कलम लेकर किटी लिखने का अभिनय करती है और बापू के होंठ हिलते दिखाई पड़ते हैं। मंच पर धीरे-धीरे अंधेरा फैलता है। परदा गिरता है।)

पांचवां दृश्य

[घर के बरामदे में बापू, रेखा और शोभा खड़े हैं ।]

रेखा : और बाबूजी,–बड़े कमरे में वही रंगीन फर्श, जो हमने पसन्द किये थे, लगवाने हैं न ?

बापू : हां बहूरानी ।

रेखा : और रसोईघर में भी एक ऐसा छोटा चबूतरा बनवा दीजिए जिस पर गोबर गैस वाला चूल्हा रखा जा सके ।

बापू : हां-हां ! ऐसा ही रसोईघर बनेगा । और हां, अपनी इस नन्हीं शोभा के लिए पढ़ने का एक छोटा-सा कमरा भी बनेगा । (ओवरसियर एक मजदूर के साथ मंच पर आता है ।)

ओवरसियर : नमस्ते बाबूजी ! नमस्ते बहन जी !

बापू : (रेखा की तरफ देखते हुए) लो, आ गए, ओवरसियर साहब !

ओवरसियर : लीजिए बहनजी, यह आपके नये मकान

का नक्शा है । मंजूर हो गया है ।
(रेखा के हाथ में नक्शा थमा देता है । रेखा उतर कर ओसारे में आ जाती है । वह नक्शे को गौर से देखती है । शोभा उससे सटी सबको देखती खड़ी रहती है ।)

ओवरसियर : बाबू जी, हमें आज से ही काम शुरू कर देना है । (मजदूर से) देखो, यहीं से इस तरह बीस फीट लम्बी खुदाई करवानी है । फिर वहां से इसी तरह चार फीट की ओर । (रेखा की तरफ देखते हुए–) बहन जी, यह पेड़ बीच में आ रहा है ।

रेखा : तब ?

ओवरसियर : पेड़ तो काफी हरा-भरा है, लेकिन इसे तो काटना ही पड़ेगा ।

(रेखा कुछ बोल नहीं पाती । उसकी आंखें डबडबा आती हैं । ओवरसियर मजदूर की तरफ देखकर)

ओवरसियर : (मजदूर से) ऐसा करो, पहले बीच में से इस पेड़ को काटकर हटाओ ।

(मजदूर पेड़ पर कुल्हाड़ी मारना ही चाहता है कि रेखा चीख पड़ती है ।)

रेखा : (तेज आवाज में) नहींsss ! –नहीं बाबूजी, नहीं !

(बापू एक कोने में खड़े गमछे से आंखें पोंछ रहे हैं। फिर तुरंत अपने को सम्भालते हुए दहाड़कर बोलते हैं।)

बापू : पेड़ काटकर यह मकान नहीं बनेगा, ओवरसियर ! आप तो पढ़े-लिखे हैं। क्या इतना भी नहीं समझते कि पेड़ भी इन्सान की तरह जानदार होते हैं। अरे भाई, पेड़ काटना भी हत्या करना है, पाप है !

(मंच पर सब उदास खड़े हैं। मजदूर अपने औजार सहेजने लगता है। मंच की रोशनी मद्धिम पड़ती है। परदा गिरता है।)

□ □ □

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
शफीक मेमोरियल
17-बी इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नई दिल्ली-110002